International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
Volume 35, Issue 03 and Publication Date: 25th May, 2023
An Indexed, Referred and Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2347-601X
www.ijemhs.com

स्वतंत्रता के पश्चात बिहार की राजनीति में जातिवाद का उभारः एक अध्ययन

प्रिंस कुमार

शोध छात्र, राजनीति शास्त्र विभाग, बी. एन. एम. यू, मधेपुरा, बिहार

सार

बिहार में हुए 1951–52 में पहले चुनाव में खूब घमासान हुआ। टिकट बंटवारे को लेकर श्री बाबू और अनुग्रह बाबू आमन–सामने थें पंडित नेहरु ने दोनों नेताओं को दिल्ली तलब किया। टिकट बंटवारे को लेकर सिन्हा लायब्रेरी में बैठक भी हुई। प्रसिद्ध कवि रामदयाल पांडेय ने कांग्रेस की बैठक पर एक रिपोर्ट 'योगी' में लिखी– 'महुआ बाजार में कांग्रेसी उम्मीद्वारों का निर्णय। पैरवी और टडइली का जोर, महिलाओं की उपेक्षा। जनतंत्र की नींव में जातीयता और दलबंदी का नंगा नाच।'[1]

विस्तार

'पहले विधानसभा के लिए होने वाले इस चुनाव के लिए शाहाबाद, चम्पारण, संथालपरगना, सारण, पलामू इत्यादि जिलों के लिए दो–दो सूचियां पेश की गयीं। तिरहुत में सिर्फ मुजफ्फरपुर जिला कांग्रेस पर श्रीबाबू के समर्थकों का अधिकार है। सारण, चम्पारण, दरभंगा में अनुग्रह बाबू का। भागलपुर कमिशनरी में सिर्फ मुंगेर और पूर्णिया कांग्रेस पर श्रीबाबू के दल का कब्जा है।'[2]

1952 के चुनाव में बिहार की राजनीतिक पहचान बदल गयी! बिहार के स्वनामधन्य नेता श्रीबाबू और अनुग्रह नारायण सिंह बिहारी राजनीति के दो धुरी बन गये और कांग्रेस– दो धुरियों का एक वृत! राजेंन्द्र बाबू बड़े नेता थे, लेकिन वे राष्ट्रपति बन गये थे और जयप्रकाश नारायण सोशलिस्ट पार्टी में थे। राजनीति में कायस्थ जाति की जो ताकत बीस के दशक में थी, वह अब नहीं रही। कायस्थ जाति हाशिये पर चली गयी। प्रदेश कांग्रेस कार्यकारिणी समिति में कृष्णवल्लभ सहाय का जातिगत प्रतिनिधित्व मात्र 5.26 प्रतिशत पहुंच गया था।

और तो और, श्रीकृष्ण सिंह गुट ने कृष्णबल्लभ सहाय को अपनी तरफ मिला लिया और अपना प्रतिनिधि चुन लिया। सहाय के साथ बैठकर उसने पटना और संथालपरगना के प्रत्याशियों की सूची तैयार कर दी। इधर अनुग्रह नारायण सिंह के साथ मिल कर जयप्रकाश नारायण भी ऐसे प्रयास में शामिल हुए। बाद में श्रीकृष्ण सिंह और जयप्रकाश नारायण के बीच आरोप–प्रत्यारोप का भी दौर चला, जिसमें जयप्रकाश नारायण ने श्रीबाबू के मुख्यमंत्रित्व वाले राज को 'भूमिहार राज' की संज्ञा दी।[3]

आजाद भारत की उस प्रथम चुनावी गहमा–गहमी में भी पिछड़ी जातियां हाशिए पर थीं। राहुल सांस्कृत्यायन ने लिखा है कि वे बिहार और उत्तर प्रदेश में बड़ी जाति से ऊब कर विद्रोह की बातें कर रही थीं। छूत–अछूत मिलाकर पिछड़ी जातियों की आबादी सैकड़े 70–80 प्रतिशत हैं। उनके सतर्क हो जाने पर निश्चय ही 'ब्राह्मण–क्षत्री–लाला' के अगुआपन के लिए कोई संभावना नहीं रह जाती है.....। कांग्रेस के 'ब्राह्मण–क्षत्री–लाला' पंचायत चुनाव के समय घबड़ा गये थे। उनके पैरों तले की धरती खिसकती मालूम हुइ थी। उस समय वे शायद भूल गये थे कि शत्रु की शक्ति को शत्रु की छूट से धता बताया जा सकता हैं।..... चुनाव के समय उन्होंने ऐसा ही किया। शोशित नेताओं में जिनको अधिक प्रतिभाशाली देखा, उन्हें कांग्रेस का टिकट दे दिया गया। वे (शोषित नेता) दो बैलों की जोड़ी की जय मनाने लगे। चुनाव के बाद दो–चार पालियामेंट्री सेकेट्री बना देने भर से उनका काम निकल गया।[4] *बाद में 90 के दशक तक कांग्रेस बिहार की चुनावी राजनीति में इसी रणनीति को आजमाती रही।*

बहरहाल, उसी दौरान टिकट बंटवारे की सरगर्मी के बीच 'पाला बदलने' का खेल शुरु हुआ! शाहाबाद कांग्रेस के एक नेता हरगोविन्द मिश्र ने डा0 अनुग्रहनारायण सिंह का गुट छोड़ दिया और वे श्रीबाबू के साथ हो गये। टिकट वितरण को लेकर दोनों गुटों के बीच भारी कटुता पैदा हो गयी। स्थानीय अखबारों में दोनो गुटों के कई नेताओं के इस्तीफा देने और टिकट वापस लौटाने की बात भी छपी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रजापति मिश्र द्वारा टिकट लौटाने की बात उभर कर सामने आयी।

'योगी' की रिपोर्ट के अनुसार कांग्रेस में 75 प्रतिशत सीटों को लेकर मतभेद हुआ, तो कांग्रेस चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण सुधांशु को मतभेद दूर करने की जिम्मेवारी सौंपी गयी। उन्होंने प्रत्येक जिले की सूची तैयार की। कांग्रेस की सूची को

'हुकार' ने धोखे की टट्टी बताया– प्रदेश चुनाव समिति ने गुटभक्ति को ही प्रथम स्थान दिया, योग्यता और ईमानदारी को खटाई में डाल दिया। नेहरु सिद्धान्त का गला दबोचा गया। राज्य में धर्म विरोधी साम्प्रदायिकता की कौन कहे, जातीयता को ही कांग्रेस ने अपनी नामजदगी का आधार बनाया![5]

कांग्रेस की सूची जारी हुई, तो प्रदेश भर में बावेला मच गया। तीस कांग्रेसी विद्रोहियों ने शाहाबाद, दरभंगा, चम्पारण, मुंगेर और पलामु जिलों में पर्चा दाखिल कर दिया। दरभंगा जिला में झंझारपुर नगर कांग्रेस कमेटी के सभी सदस्यों ने अपना इस्तीफा दे दिया और कांग्रेसी प्रत्याशी कपिलेश्वर झा के विरुद्ध झंझारपुर नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रत्नेश्वर मिश्र को चुनाव मैदान में उतार दिया। प्रांतीय कांग्रेस समिति के सदस्य राजेंद्रनारायण चौधरी तो अपनी ही चाची जनककिशोरी देवी के खिलाफ हरलाखी के चुनावी मैदान में उतर गये। दरभंगा में बारह लोग बागी बनकर उतरे।

समस्तीपुर में लोकसभा के प्रत्याशी सत्यनारायण सिंह के खिलाफ बुजुर्ग कांग्रेसी रामप्रसाद शर्मा मैदान में उतर गये। शाहाबाद के पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सूरजनाथ चौबे ने अपने समर्थकों के साथ इस्तीफा दे दिया। उधर ध्वजा प्रसाद साहू ने एक बयान जारी कर कांग्रेस की 'महाभ्रष्टता' का पर्दाफाश किया। दासू सिंह को टिकट नहीं मिल सका। पटना नगर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष रामलक्ष्मण शर्मा भी कार्यसमिति भंग कर पूर्वी पटनासिटी क्षेत्र से मैदान में उतर गये। बिहार के चुनाव मैदान में कुल 1600 प्रत्याशी थे। दोनों गुटों के लड़ाकु नेताओं ने भी रंग दिखाया और कांग्रेस के तीन बड़े नेता पराजित हो गये। पराजित होन वाले नेता थे– विनोदानंद झा , अब्दुल कयूम अंसारी और देवशरण सिंह। पिछड़ों की राजनीति में तब सक्रिय इंजीनियर आर0 बी0 सिंह ने कहा– ' इस चुनाव (1952) में मैने देखा कि जातीयता और गुट के नाम पर नंगा तांडव किया गया। अब्दुल कयूम अंसारी कांग्रेस के प्रत्याशी थे और बसावन सिंह सोशलिस्ट पार्टी के प्रत्याशी, पर कांग्रेस के एक गुट ने गुप्त रुप से श्री अंसारी का विरोध किया। फलस्वरुप इस चुनाव में श्री अंसारी हार गये।'[6] *कांग्रेसी नेता अनुग्रहनारायण सिंह के अनुसार, 'सुना गया कि भागलपुर के सियाराम सिंह ने श्री सहाय के संकेत पर विनोदा जी को उलझन में डालने के लिए उनके विरोधी उम्मीदवार को छिपे रुस्तम सहायता पुहंचायी थी।'*[7]

यही हाल देवशरण सिंह के साथ भी हुआ। देवशरण सिंह को हरवाने में अनुग्रह नारायण सिंह का नाम आया। 'बिहार के दोनो गुटों के नेताओं और उनके पिछलग्गुओं ने एक दूसरे पर जिस प्रकार कीचड़ उछाले, वह प्रांत के इतिहास में अपना कलंकपूर्ण स्थान बना ही चुका है।'[8]

आजादी के बाद के इस प्रथम विधानसभा चुनाव में बिहार में कांग्रेस के 223 प्रत्याशी विजयी हुए और सोशलिस्ट पार्टी को सिर्फ 24 सीटें मिलीं। वैसे, लोकसभा के चुनाव में भी कांग्रेस के 45 प्रत्याशी जीते लेकिन चुनाव परिणाम आने के बाद बिहारी मंत्री बनने–बनाने के लिए केंद्रीय स्तर पर भी कम बवाल नहीं हुआ।

दरसल, 1937 से 1952 तक श्री कृष्ण सिंह के खिलाफ अनुग्रहनारायण सिंह कतई खुलकर खड़े नहीं हो सके। नये मंत्रिमंडल का गठन हुआ और उसमें दो नये चेहरे– महेश प्रसाद सिंह और दीपनारयण सिंह– शामिल किये गये। हारे हुए तीन नेताओं – विनोदानंद झा, अब्दुल कयूम अंसारी और देवशरण सिंह– के स्थान पर हरिनाथ मिश्र, मुहम्मद शफी और शिवनंदन मंडल को लिया गया। जगलाल चौधरी के स्थान पर भोला पासवान शास्त्री लाये गये।[9]

श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में गठित मंत्रिमंडल के सदस्यों की संख्या सोलह थी। उनमें तीन उप मंत्री थे। हारने के बाद भी देवनारायण सिंह को मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया। मंत्रिमंडल में शिवनंदन प्रसाद मंडल (यादव), वीरचंद पटेल (कुर्मी) और देवशरण सिंह (कुर्मी) मंत्री बने। पटेल उप मंत्री बनाए गये।

चुनाव के एक ही साल बाद हुए फतुहा उपचुनाव की बानगी दिलचस्प है– 'ऊपर–ऊपर से सिद्धांत का जामा और नीचे–नीचे जातीयता का आधार! कांग्रेस के उम्मीदवार कुर्मी हैं। ..... पार्टी के उम्मीदवार यादव। इस क्षेत्र में इन्हीं दो जातियों का बोलबाला है और दोनों जातियां जम कर लड़ रही हैं। भूमिहार साथ दे रहे हैं कुर्मियों का, क्योंकि यह कुर्मी मिनिस्टर, श्री बाबू की पार्टी का है। राजपूत समझते हैं कि श्रीबाबू की पार्टी ने अनुग्रह बाबू को तंग किया है। अतः वे लोग यादव को मिला कर एक सबक सिखाना चाहते हैं।[10]

श्रीकृष्ण सिह के मंत्रिमंडल में महेश प्रसाद सिंह के शामिल किये जाने के एक साल बाद श्रीकृष्ण सिंह ने कृष्णवल्लभ सहाय को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। फलतः श्री सहाय और महेश प्रसाद सिंह के बीच टकराव बढ़ा। महेश प्रसाद सिंह ने मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह के इर्दगिर्द रहनेवाले अन्य जातियों के नेताओं और स्वतंत्र विचार रखनेवाले भूमिहारों को अलग किया और 'भूमिहारवाद' के तहत योजनाबद्ध ढंग से ललितेश्वर प्रसाद शाही, सियाराम सिंह,कृष्णकांत सिंह, धनराज शर्मा जैसे नेताओं का 'हार्ड कोर' बनाया। उसने सारगंधर सिंह, राम विनोद सिंह, श्यामा प्रसाद सिंह, सरदार हरिहर सिंह, जानकीनंदन सिंह जैसे नेताओं को हाशिये पर ढकेल दिया। मंत्रिमंडल के गठन के एक साल बाद 1953 में श्रीकृष्ण सिंह के साथ रहनेवाले गैरभूमिहार नेताओं को मुख्यमंत्री की लॉबी छोड़नी पड़ी। इन नेताओं ने महेश प्रसाद सिंह के खिलाफ मोर्चा खोला और कांग्रेस आलाकमान को लंबा ज्ञापन भेजा। 'चूंकि रामचरित्र सिंह स्वाजातीय होते हुए भी महेश बाबू की जाति–प्रवृति के विरोधी थे, इसलिए इन्हें गिराने के लिए राज्य कांग्रेस के अध्यक्ष नंद कुमार सिंह को हथकंडा बनाया गया। इस प्रकार महेश–के0 बी0 सहाय का द्वंद्व विभिन्न कैंपों में प्रकट होकर शनैः–शनैः उग्र रुप धारण करने लगा।[11]

1957 के चुनाव में भी गुटबंदी, नेताओं के बीच उखाड़ने–पछाड़ने का कांग्रेसी दौर थमा नही। दरअसल 1937 के चुनाव से जो जातिगत गुटबंदी शुरु हुई वह 1957 के चुनाव के समय तक सत्ता–राजनीति में छीना–झपटी का मुख्य आधार बन गयी। बड़े–बड़े स्वनामधन्य नेता जातीय संगठनों के संरक्षक बन गये।

उस चुनाव में जातीय टकराव अपने चरम पर पहुंच गया! महेश प्रसाद सिंह और कृष्ण वल्लभ सहाय के बीच की लड़ाई ने तीखा रुप धारण कर लिया। रामचरित्र सिंह, सरदार हरिहर सिंह और जानकीनंदन सिंह को टिकट नहीं मिला! दिलचस्प बात यह हुई कि कृष्णवल्लभ सहाय और महेश प्रसाद सिंह दोनों चुनाव हार गये। दोनों नेताओं ने चुनाव में एक दूसरे के खिलाफ कमान थाम ली थी।

कांग्रेस में गुटों की लड़ाई का यह आलम था– 'कांग्रेस पार्टी के नेता के चुनाव में क्या–क्या नहीं हुआ! श्रीबाबू और अनुग्रह बाबू में चालीस वर्षो की दोस्ती थी। दोनों ऐसे लड़े कि कुत्ते भी मात। कौन–कौन से कुकर्म नहीं किये गये। लाखों रुपये बंटे। सदस्यों

की चोरी हुई। कुछ बिचारे पिट भी गयें। दिल्ली से लोग आये। शांत कहां तक करते। आग लगा कर चले गये।'[12]

1957 के चुनाव में कांग्रेस की सीटें 1952 की तुलना में घट कर विधानसभा में 210 तथा लोकसभा में 41 हो गयी।

दरअसल, बात यह थी कि श्री कृष्ण सिंह और अनुग्रह नारायण सिंह के बीच पहली बार नेता पद के चुनाव की खुली टक्कर हुई! अब तक अनुग्रहनारायण सिंह ने कभी खुली चुनौती नहीं दी थी। यह पहला मौका था। के0 बी0 सहाय ने पाला बदल किया था। वे अबकी अनुग्रहनारायण सिंह के साथ थे। मंत्रिमंडल का गठन हुआ। नौ केबिनेट और 15 उपमंत्री बनाए गये। वीरचंद पटेल को कैबिनेट मंत्री बनाया गया। सहदेव महतो (कोइरी), देव नारायण यादव और दारोगा प्रसाद राय उपमंत्री बनाये गये। मंत्रिमंडल के गठन के बाद श्री कृष्ण सिंह ने हारे हुए नेता महेश प्रसाद सिंह को खादी बोर्ड का अध्यक्ष बना दिया। जय प्रकाश नारायण ने श्री कृष्ण सिंह को पत्र लिखा– 'महेश बाबू खादी बोर्ड के अध्यक्ष बना दिये गये। उन्हें सरकारी बंगला दे दिया गया। बाद में वे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के खजांची भी बना दिये गये। पर अपनी तमाम सेवाओं के बावजूद के0 बी0 सहाय को कुछ नहीं मिला।'[13]

–: संदर्भ :–

1. *'योगी', 29 सितम्बर, 195।*
2. *'योगी', 20 अक्टूबर, 195।*
3. *'श्री बाबू एंड जेपीः एलिगेशन–काउंटर एलिगेशन', 1957, एन0 एम0 पी0 श्रीवास्तव।*
4. *'मेरी जीवन यात्रा', राजुल सांकृत्यायन–4, पेज–83।*
5. *'हुंकार', 16 नवबंर, 1951।*

6. *'जीवन संघर्ष', आर0 वी0 प्रसार, इंजीनियर, पेज–155।*

7. *'मेरे संस्मरण', अनुग्रहनारायण सिंह, पेज – 43।*

8. *'हुमार', 16 नवंबर, 195।*

9. *'बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम', प्रसन्न कुमार चौधरी– श्रीकांत, पेज–204–205।*

10. *'रामवृक्ष बेनीपुरी', संपादकः रामविलास शर्मा, पेज–342।*

11. *'मेरे संस्मरण', अनुग्रहनारायण सिंह, पेज– 438।*

12. *रामवृक्ष बेनीपुरी', संपादकः रामविलास शर्मा, पेज– 343।*

13. *'श्री बाबू एंड जेपीः एलिगेशन–काउंटर एलिगेशन', एन0 एम0 पी0 श्रीवास्तव।*